खाली जेब
जिंदगी के कई
मतलब समझाती है।
– अज्ञात

भारत बाकी दुनिया से बेहतर

दुनिया में यह अनुपात पांच फीसदी से ऊपर है जबकि भारत में यह साढ़े तीन फीसदी से नीचे है। हालांकि हर मौत एक परिवार के लिए बहुत बड़ा हादसा है, कागज पर लिखी कोई संख्या नहीं, जिसके अनुपात को देखकर राहत महसूस की जा सके।

आरती अग्रवाल।

देश में कोरोना के कारण जान गंवाने वालों की तादाद 12 हजार के पार जा चुकी है। इतनी बड़ी संख्या दहशत पैदा करती है, लेकिन कुल संक्रमणग्रस्त लोगों में मृतकों के अनुपात की दृष्टि से भारत की स्थिति आज भी बाकी दुनिया से बेहतर है। दुनिया में यह अनुपात पांच फीसदी से ऊपर है जबकि भारत में यह साढ़े तीन फीसदी से नीचे है। हालांकि हर मौत एक परिवार के लिए बहुत बड़ा हादसा है, कागज पर लिखी कोई संख्या नहीं, जिसके अनुपात को देखकर राहत महसूस की जा सके। ऐसे में यह अच्छी बात है कि सरकार मौतें कम से कम रखने की दिशा में प्रो–एक्टिव होती हुई दिख रही है।

राजधानी दिल्ली में हालात बिगड़ने के बाद केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने न केवल अस्पतालों का औचक निरीक्षण किया बल्कि स्वास्थ्यकर्मियों की समस्याओं को समझने का प्रयास भी किया। प्रधानमंत्री मोदी ने भी पिछले दो दिनों में सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से बातचीत की और कहा कि लॉकडाउन तथा अर्थव्यवस्था की समस्याएं भी कोरोना के खिलाफ जारी इस जंग से जुड़ी हैं।

मौतों को कम से कम रखने के लिए टेस्ट की संख्या बढाने का फैसला अच्छा है लेकिन पर्याप्त नहीं है। ज्यादा से ज्यादा लोगों की जान बचाने के लिए हर गंभीर केस का समय रहते अस्पताल पहुंचना और जल्द से जल्द इलाज शुरू होना जरूरी है। यह सही है कि कोरोना की कोई दवा अभी तक नहीं खोजी जा सकी है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मरीज का बचना सिर्फ उसके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता या संयोग पर निर्भर करता है।

अस्पताल में काबिल डॉक्टर और स्टाफ कई स्तरों पर इस लड़ाई में सकारात्मक योगदान करते हैं। कोविड से सबसे ज्यादा मौतें दिल, गुर्दे और लिवर की बीमारियां झेल रहे लोगों की हुई हैं। इनमें कई की जान ऐसी बीमारियों की देखरेख भर से बच जाती है। कुछ मामलों में शरीर के ओवर रिएक्शन के चलते फेफड़ों में फफोले पड़ जाते हैं तो जानलेवा एलर्जी जैसी उस स्थिति से निपटने में दवाओं से भरपूर मदद मिलती है। इसके अलावा इस वायरस को खत्म भले न किया जा सके, पर दवाओं के जरिये शरीर में इसकी ग्रोथ धीमी जरूर की जा सकती है। इससे शरीर को संभलने का वक्त मिल जाता है जो इस जंग में निर्णायक साबित होता है।

अमेरिका और ब्रिटेन से कोविड की गंभीर स्थिति में पहुंचे मरीजों की जान बचाने में डेक्सामेथासन के सफल उपयोग की खबरें आई हैं। पाया गया कि वेंटिलेटर पर जा चुके मरीजों के फेफड़े भी इस हल्के स्टेरॉयड से हरकत में आ गए और उन्हें बचाना संभव हो गया। इन सारी मेडिकल कोशिशों के लिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि मामूली या नगण्य लक्षणों वाले मरीज भले ही होम क्वारंटीन में रहें, लेकिन जब भी कोई मामला सीरियस होता दिखे, तत्काल उसे हॉस्पिटल शिफ्ट करने में किसी तरह की अड़चन न आए।

अनिवार्य

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

हमारे मस्तिष्क की यह प्रवृत्ति ही है कि वह अपूर्णता, कमियों और त्रुटियों को आसनी से पकड़ लेता है, और आखिर में इस प्रक्रिया के तहत हम अपने मूड, अपने मस्तिष्क को त्रुटिपूर्ण कर बैठते हैं। ऐसी स्थिति में यह अनिवार्य है कि हम इस प्रक्रिया से बाहर निकलकर भीतरी तौर पर मजबूत और साहसी बनें। अन्यथा श्वेत–श्याम दृढ़ता बढ़ते हुए 'अपरिभाषित क्षेत्र' या भ्रान्ति को जगह दे देती है। जैसे–जैसे अधिक शराब खून में प्रवेश करती है, वह भ्रान्ति को बढ़ाती है। एक चकराया हुआ मस्तिष्क भद्र और अभद्र विचारों, शब्दों और कार्यों के बीच अंतर नहीं कर पाता है। यह केवल तब ही होता है जब मस्तिष्क की स्पष्टता पुनः स्थापित हो जाती है। तिब्बत के बुद्ध शराब या नशे का सेवन करने से पूर्व एक छोटी–सी प्रार्थना करते है।

संपादकीय

मारते हुए 'मरे'

लद्दाख की गलवान घाटी में भारत और चीन के बीच हिंसक झड़प में भारत के 20 सैनिक शहीद हो गए। देश में भावनाओं का एक ज्वार उठा, लोगों ने सवाल पूछना शुरू किया। कुछ ने कहा कि जब पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक हो सकती है तो चीन पर क्यों नहीं? पाकिस्तान छिपकर हमारे बेटों की हत्या कर रहा है, जबकि चीन तो सीधी लड़ाई में उन्हें मार रहा है, पीएम मोदी चुप क्यों हैं? सवाल उठे तो पीएम साहब ने कह दिया कि हमारे देश के सैनिक चीन के सैनिकों को मारते हुए 'मरे' हैं। फिर किसी ने सवाल पूछा तो उसे गद्दार कह दिया गया। किसी ने कहा कि मोदी की विदेश नीति फेल हुई है तो घूम फिरकर फिर से नेहरू को जिम्मेदार बताया जाने लगा। किसी ने पूछा कि भई! चीनी राष्ट्रपति को झूला झुलाया था, अहमदाबाद घुमाया था, फिर उसका क्या फायदा हुआ, तो जवाब मिला कि पीएम पर भरोसा रखिए।

देश की सरकार जब दृढ़ इच्छाशक्ति दिखाते हुए पाकिस्तान की नापाक हरकतों का करारा जवाब देती है तो हम उसके साहस की सराहना करते हैं। मारकर हमारी सेना आती है, फिर भी हम कहते हैं कि यह शौर्य देश की सरकार का है। आज जब लद्दाख में चीन हमारे बेटों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ कर रहा है तो हमारे कुछ पत्रकार सेना पर सवाल उठा रहे हैं, क्यों भई? आजादी के तुरंत बाद कांग्रेस ने गलतियां कीं, लगातार गलतियां कीं, हम उन गलतियों के लिए कोसेंगे३ देश के प्रधानमंत्री ने चुनावी मंच से लेकर विभिन्न अवसरों पर भी उन्हें कोसा है, लेकिन आज जिनकी सरकार है, उनसे जवाब क्यों न मांगा जाए? आप भी कहते हैं ना कि यह नया भारत है, 1962 का भारत नहीं है तो कैसे किसी की हिम्मत हो जाती है कि भारत की जमीन पर बुरी नजर डाले? 125 करोड़ का देश है, दीजिए जवाब, हम आपके साथ हैं।

इसकी जगह अब वे माइक्रोसॉफ्ट टीम, गूगल मीट आदि जैसे एप का इस्तेमाल कर रही हैं तो ट्यूशन देने वाले कभी–कभार बच्चों को पढ़ाने के लिए वॉट्सऐप भी चला लेते हैं।

शिक्षा व्यवस्था से कोसों दूर

रमेश ठाकुर।

कोरोना के साथ ही स्टूडेंट्स के लिए जो मोबाइल ऐप आधारित कक्षाएं शुरू हुई हैं, उसके कई दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। पहला तो यही कि जिनके पास इन कक्षाओं से कनेक्ट होने की हैसियत नहीं है, या जिनका इंटरनेट स्लो है, वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था से कोसों दूर हैं। इसके अलावा बच्चे पढ़ने के बहाने मोबाइल या लैपटॉप पर गेम्स खेलते हैं। ऐसे भी कई समाचार हैं, जिनमें भरी कक्षा में मोबाइल ऐप को हैक किया गया और उसमें पॉर्न फिल्म चलाई गई।

डिजिटल क्लासेस सबसे पहले जूम ऐप पर चलाई गईं, जिसके हैक होने की कई शिकायतें आईं। अप्रैल के महीने में दिल्ली में जब इसी ऐप से ऑनलाइन क्लास चल रही थी, तो सिलेबस की जगह अचानक पॉर्न फिल्म चलने लगी। इसके तुरंत बाद चंडीगढ़ में भी ऐसी घटना घटी। वहां टीचर ऐप के जरिए 10वीं के करीब 45 छात्र–छात्राओं को पढ़ाना शुरू करने वाली थीं कि तभी छात्रों के मोबाइल स्क्रीन पर पॉर्न फिल्म चलने लगी। जूम ऐप के बारे में टीचर को ज्यादा जानकारी नहीं थी। इसीलिए पांच मिनट तक कुछ समझ में ही नहीं आया और तब तक फिल्म चलती रही। पुलिस ने मामले की जांच की तो पता चला कि ऐप को हैक किया गया।

हैकिंग की यह खबर सिर्फ भारत की ही नहीं है, दुनिया भर से ऐसी कई घटनाओं के समाचार हैं।

हालांकि, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इस ऐप को लेकर अप्रैल में ही गाइडलाइंस जारी की थीं, जिसके बाद शिक्षण संस्थाओं ने इसका प्रयोग करना बंद कर दिया। इसकी जगह अब वे माइक्रोसॉफ्ट टीम, गूगल मीट आदि जैसे एप का इस्तेमाल कर रही हैं तो ट्यूशन देने वाले कभी–कभार बच्चों को पढ़ाने के लिए वॉट्सऐप भी चला लेते हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इस तरह की ऑनलाइन क्लासेस सफल नहीं हो पा रही हैं, क्योंकि वहां इंटरनेट कनेक्टिविटी की बड़ी समस्या है। ऐसी क्लासेस के चलते कम पढ़े–लिखे पैरंट्स भी खूब परेशान होते दिख रहे हैं। कोरोना ने कमाई कम कर दी है, फिर भी उन्हें स्मार्ट फोन, लैपटॉप या टैबलेट अरेंज करने पड़ रहे हैं।

जो बच्चे मोबाइल या लैपटॉप के जरिए पढ़ रहे हैं, उन्हें न तो स्कूली वातावरण मिल रहा है और न ही वे टीचरों के साथ अच्छे से जुड़ पा रहे हैं। इसी के चलते ट्यूशनों की जरूरत एकाएक बढ़ गई। अधिकांश अभिभावक ऑनलाइन क्लासों के साथ–साथ ट्यूशन पढ़ाने वालों का भी सहारा ले रहे हैं। लेकिन यह कोई नहीं समझा पा रहा है, कि जो बच्चे स्कूल में भी नहीं पढ़ते थे, वे ऑनलाइन माध्यमों से कैसे पढ़ाई पूरी कर पाएंगे। फिर ट्यूशन का बोझ हमेशा से अभिभावकों की जेब पर डाका डालता रहा है। इस साल की शुरुआत में आई एनएसएसओ की सर्वे रिपोर्ट ने भी माना है कि भारतीय परिवारों की कमाई का एक तिहाई हिस्सा बच्चों की अतिरिक्त शिक्षा यानी ट्यूशन पर खर्च होता है।

कहने को तो निजी स्कूल बाहर से टयूशन लेने को मना करते हैं, पर बढ़ते कॉम्पिटिशन और ज्यादा अंक लाने की लालसा बच्चों और अभिभावकों को कोचिंग तंत्र के समक्ष नतमस्तक होने पर मजबूर कर देती है। इसके अलावा कामकाजी परिवारों के बच्चे अक्सर स्कूली होमवर्क पूरा नहीं कर पाते। ऐसे बच्चों के लिए टयूशन दिलवाना जरूरी भी हो जाता है। गणित, विज्ञान और अंग्रेजी जैसे कुछ सब्जेक्ट तो ऐसे हैं, जिनके लिए पैरंट्स प्रफेशनल ट्यूटरों का इंतजाम करते ही हैं, भले कितनी ही मजबूरी हो।

सूडोकु नवताल-5389

मध्यम

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5388 का हल

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	8	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

कुछ भी कहना जल्दबादी होगी

मोहन। संयोग से बीजेपी के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का कर्मक्षेत्र बिहार ही रहा है। ऐसे में क्या बीजेपी नीतीश से पल्ला झाड़कर अकेले चुनाव लड़ने का मन बना सकती है? अभी यह कहना बहुत मुश्किल है। इसके कई कारण है। फिलहाल बीजेपी किसी तरह का खतरा मोल लेने के मूड में नहीं है। वह एक–एक कदम सोच–समझकर उठाएगी। सूत्रों का कहना है पार्टी नेतृत्व स्थितियों पर बारीक नजर बनाए हुए है। अगर कोरोना के केस बिहार में बढ़ते हैं और प्रदेश में अराजक माहौल बनता है तो बीजेपी नीतीश से पल्ला झाड़ सकती है। कुछ लोगों का कहना है कि अगर बिहार में समय से चुनाव नहीं होते हैं और चुनाव टलता है तो बीजेपी राष्ट्रपति शासन के पक्ष रहेगी और ऐसी स्थिति में वह अकेले चुनाव लड़ सकती है। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले कई चौंकाने वाले समीकरण सामने आ सकते हैं। वैसे भी बीजेपी चौंकाने में सबसे आगे रहती है। हालांकि, प्रदेश की स्थितियां अगस्त के बाद ही साफ होंगी।